एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

जेसमिनम की खेती एवं कीट और रोग प्रबंधन

*पंकज कुमार मीणा
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: pankajmeena626@gmail.com

जेसमिनम समूह में मुख्य रूप से मोगरा (*जेसमिनम सामबेक*), चमेली (*जेसमिनम ग्राण्डीलोरम*), जूही (*जेसमिनम ऑरीकुलेटम*) व कुन्द (*जेसमिनम प्यूबेसेन्स*) के पौधे इस संभाग में सर्वाधिक लगाये जाते हैं। ये अपनी सुगंध के कारण अधिक लोकप्रिय हैं। इनके पुष्पों से माला, वेणी, गजरे, तेल एवं इत्र भी बनता है जिसकी देश में खपत तो होती ही है साथ ही इन्हें विदेशों में भी निर्यात किया जाता है।

जलवायु एवं भूमि

इसकी खेती उष्ण जलवायु में सबसे अच्छी होती है। पौधों की अच्छी बुद्धि के लिए 24 से 32 डिग्री सेल्सियस तापमान सबसे उत्तम रहता है। पुष्प उत्पादन के लिए 35 डिग्री से 40 डिग्री सेल्सियस तापमान ठीक रहता है। वैसे तो जेसमिनम समूह के पौधे सभी प्रकार की भूमि में उगाये जा सकते हैं किन्तु अधिक उत्पादन लेने के लिए अच्छे जलनिकास वाली बलुई दोमट भूमि जिसमें जीवांश की मात्रा पर्याप्त हो, उपयुक्त रहती है।

प्रजातियाँ

मोगरा (*जेसमिनम सामबेक*): अपने प्रान्त कि लिए मोगरे की किस्में अभी विकसित नहीं हुई हैं। साधारणतया एक चक्रीय पंखुडी तथा बहुचक्रीय पंखुड़ी वाली जातियां उपलब्ध हैं। मोगरे के फूल गर्मियों में मार्च से जून माह तक खिलते हैं। इसके अतिरिक्त अर्का अराधना, इरूवतची एवं रामनाथपुरप लोकल आदि नई किस्में है।

जूही (*जेसमिनम ऑरीकुलेटम*): इसके फूल वर्षा ऋतु में खिलते हैं व फूल 5 से 8 पंखुड़ियों वाले सफेद, सुगंधमय होते हैं। इसकी स्थानीय किस्में उगाई जाती हैं। जैसे को-1, को-2 एवं पैरीमुल्लई।

चमेली (*जेसमिनम ग्रॅन्डीलोरम*): यह सीधा बढ़ने वाला आरोही पौधा है। फूल सफेद व सुगंधित होते हैं तथा गर्मी एवं वर्षा ऋतु में खिलते हैं। पुष्प का अग्र भाग सितारे के आकार का होता है। इसकी मुख्य किस्में सी.ओ-1, सी.ओ-2, अर्का सुरभि स्थानीय नामों से जानी जाती हैं।

कुन्ज (*जेसमिनम प्यूबीसेन्स*): इसमें फूल सफेद व सुगंधित होते हैं तथा सर्दी में नवम्बर से मार्च माह तक खिलते हैं हैं। पंखुड़ियों की एक से अधिक पत्तियाँ पाई जाती हैं। इसकी स्थानीय किस्मों को उगाया जाता है। इसकी पुष्प कली की लंबाई सर्वाधिक एवं गुलाबी रंग की पाई जाती है।

प्रवर्धन

जेसमिन समूह के पौधों का प्रसारण शीर्षस्थ कलम (15 सेमी. लम्बाई), दाब व अधोभूस्तारियों द्वारा किया जाता है। प्रसारण का सबसे उपयुक्त समय वर्षा ऋतु है।

भूमि की तैयारी

जेसमिनम समूह के पौधे बहुवर्षीय हैं जो कई वर्षों तक फूल देते रहते हैं अतः खेत की 4-5 फीट गहरी जुताई करनी चाहिए। इन पौधों को लगाते समय पौधे से पौधे व कतार से कतार की दूरी 2.0 x 1.5 मीटर रखनी चाहिए। पौधे लगाने से पूर्व क्रमशः 50 सेमी. लम्बाई, चौड़ाई एवं गहराई के गड्ढे खोद लेवें। इन गड्ढों में 10 किलो गोबर की अच्छी सड़ी हुई खाद एवं 50 ग्राम क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिषत चूर्ण मिट्टी में मिलाकर 10 सेमी. ऊपर तक भर देवें एवं हल्की सिंचाई करें। मिट्टी बैठ जाने पर और मिट्टी डालकर समतल कर लेवें। वर्षा ऋतु प्रारम्भ होने पर पौधों की रोपाई करें। जूही की रोपाई 1.5 x 1.5 मीटर पर कतार से पौधे की दूरी पर करना उपयुक्त है।

खाद एवं उर्वरक

पौधों की उचित वृद्धि व पुष्पन कि लिए साल में एक बार 15 से 20 किलो गोबर की खाद, 100 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सुपर फॉस्फेट एवं 100 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाष, पूर्ण विकसित पौधों की कटाई-छंटाई के बाद खुदाई कर देवें। यूरिया की मात्रा दो बराबर भागों में बाँटकर देवें। पहली मात्रा कटाई-छंटाई के तुरन्त बाद व दूसरी पुष्प कलिकाएँ बनते समय देवें।

सिंचाई

इन पौधों में सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है। साधारणतः ग्रीष्मकाल में एक सप्ताह के अन्तर से और शीतकाल में दो सप्ताह के अंतर से सिंचाई करते रहना चाहिए। पुष्प आने के समय पानी की कमी आ जाती है तो पुष्प की पैदावार में कमी आ जाती है और साथ ही सुगंध पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है अतः इस अवस्था पर सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।

कटाई-छंटाई

वर्ष में एक बार अंतिम सप्ताह दिसम्बर माह में चमेली के अतिरिक्त इस समूह के पौधों की कबई-छंटाई करना आवश्यक है जिससे नई शाखाएँ अधिक संख्या में निकले और अधिक पुष्प देवें। टूटी, सूखी व रोगग्रस्त शाखाओं के अलावा पौधों की अन्य शाखाओं को ऊपर से 30 से 45 सेमी. काट देवें।

कीट प्रबंधन

जेसमिन पर्णजीवी : इस कीट का प्रकोप फरवरी से अप्रैल के महीनों में अधिक होता है। ये कीट फूलों का रस चूसते हैं जिससे फूल मुरझा कर गिर जाते हैं। नियंत्रण हेतु मैलाथियान 50 ई.सी. अथवा डाईमिथोएट 30 ई.सी. एक मिली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

जेसमिन पर्णजीवी : इस कीट का प्रकोप फरवरी से अप्रैल के महीनों में अधिक होता है। ये कीट फूलों का रस चूसते हैं जिससे फूल मुरझा कर गिर जाते हैं। नियंत्रण हेतु मैलाथियान 50 ई.सी. अथवा डाईमिथोएट 30 ई.सी. एक मिली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

जेसमिन कलिका लट: इस कीट की लटें हल्के पीले रंग की होती हैं जो बाद में गहरे रंग की हो जाती हैं। बरसात के दिनों में जब नई पुष्प कलियां निकलती हैं, उन पर इस लट का आक्रमण शुरू हो जाता है जिससे पुष्प नहीं बनते हैं। नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस 36 एस. एल. 2 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

बरूथी : इसका प्रकोप पत्तियों पर ऊपर से नीचे की ओर चालू होता है। आक्रमण के फलस्वरूप पत्तियाँ मुड़ जाती है व पौधा कमजोर पड़ जाता है। नियंत्रण हेतु मिथाइल डिमेटॉन का एक मिली. दवा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

व्याधि प्रबंधन

पत्ती धब्बा रोग : पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। नियंत्रण हेतु जाइनेब या मेंकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

फूलों की तुड़ाई एवं उपज

इस समूह के पौधों में पुष्पों की कलियां जब पूर्ण विकसित हो जावें और खिलना शुरू करें उससे पूर्व ही तुड़ाई करनी चाहिए। कलियों पर पानी छिड़क कर गीले कपड़े में लपेटकर छाया में रखना चाहिए तथा उपयोग से पहले थोड़-थोड़े समय के अंतर पर पानी छिड़कते रहना चाहिए। इसी प्रकार जब-जब पुष्प कलियाँ विकसित होती रहें, तो उन्हें तोड़ते रहना चाहिए। इस समूह के पुष्पों की औसत उपज 80 से 100 क्विंटल प्रति हैक्टर तक मिलती है। यदि पौधों की देखरेख उचित प्रकार से की जाये तो करीब 15 वर्ष तक अत्यधिक पुष्प उत्पादन होता है।